रात्रि क्लास ओम शान्ति 18 16-11-67

हाँ बाप पहले कहते बच्चों से पूछते है अहम आत्मा होकर बैठे हो? बाप तो सावधान करते है परन्तु कोई रहते है कोई नहीं रहते। परन्तु पूछने से सत्य नहीं बतायेंगे। सच्च जानते ही नहीं है। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो। रात दिन सुनते है फिर बुध्दि में नहीं बैठता। बादशाही में तो आयेंगे परन्तु बनेंगे। जानते है हमारा कोई पद है नहीं। इसलिये बाबा कहते है बाहर में ... पीछे तो अच्छा पद पायेंगे। बाप को भूल बहुत जाते है। इसलिये बाप कहते है मैं जो हूं जैसा हूं विरला कोई जानते है। फिर पीछे में कहेंगे बाबा हम भूल गये क्षमा करना। अब क्षमा की बात नहीं। जितना जो करते है उतना वह पाते है। उन्नति अपनी करनी है। इतना जोर से नशा होना चाहिये बाप, बाप है टीचर है गुरु है वह हमको पढ़ाते है तो कितना पढ़ाई पर अटेन्शन देना चाहिये। परन्तु पूरा अटेन्शान देते नहीं। जैसे कि कुछ समझते ही नहीं है। बच्चे समझ कर आते है कि हम किस के पास जाते है। ... नशा चाहिये। बहुत ही खुशी और उमंग में रहना चाहिये। बच्चे जानते है इतनी सेवा करने वाला बाप के सिवाय और कोई होता नहीं। वे एक तीनों रूप में सेवा करते है। कितना ऊंचा ले जाते है। तो बच्चों को कितना पढ़ाई में ध्यान देना चाहिये। नहीं तो बहुत घाटा पड़ जायेगा। अपना ही दिवाला निकाल देते। अच्छे रीत पढ़े तो कितना ऊंच पद पायें। बाप ने समझाया है आंखें बड़ा धोखा देने वाली है। गुस्से में आकर आंखे निकाल देते है। वो तो सूरदास की कहानी है। है इसी समय की बात। आंखे बहुत धोखे बाज़ है। इस में बड़ी मेहनत चाहिये। इनको वश में करने के लिये बड़ी मेहनत चाहिये। डरपोक भी ना होना चाहिये। देखना है आंखें धोखा तो नहीं देती है। मेहनत है, कहना तो सहज है।

रात्रि क्लास, 17-11-67 रास्ता किसको बताना बहुत सहज है। सिरफ कोई कोई को लज्जा आती है। समझाना तो सहज है कि पतित पावन बाबा है। इस समय दुनियां पतित और तमो प्रधान बनी है। आश्चर्य भूल ... में पवित्र ही रहती है। किसी को भी समझाओ तो कहो कि यह तमो प्रधान दुनियां है। आत्मा भी तमो प्रधान है और शरीर भी तमो प्रधान है। सतयुग में आत्मा और शरीर दोनो सतो प्रधान होते है। ... परन्तु कोई की भी बुध्दि में बैठता नहीं है। कई अच्छा अच्छा भी कहते है। जयपुर में कितनी प्रजा बनी होगी। प्रजा बहुत बनती है। उलेहना नहीं देंगे कि हमको पता नहीं पड़ा। सब किसम के परचे निकालते रहो। बेहद के बाप से आकर नई दुनियां का वर्सा लो। तो सब आवेंगे। परचे निकालते रहना चाहिये। विश्व की बादशाही मिलती है। यह भी निश्चय है कि राजधानी स्थापन हो रही है। धर्म तो स्थापन होगा ही ... बच्चों का दिल दिलशिकस्त न होनी चाहिये। ... सर्विस पर है 50-60 हज़ार प्रजा जरूर बना ली होगी। ... भी ऐसा कहता है ना। बाप आया हुआ है। वो पतित पावन है। कहते है कि मुझे याद करो। ... थोड़े है के जो चटि आद सकते है। नम्बरवार ही कितनी गरीब ... भी आती है। ड्रामा प्लान अनुसार स्थापना होती रहती है। पुरुषार्थ किये बिना कोई रह नहीं सकेंगे। ड्रामा जरूर पुरुषार्थ करवायेगा। ... बच्चे तो सर्विस में लगे ही रहते है। हर एक समझ सकते है कि हमने कितनो को रास्ता बताया है? तो सहज में ही समझने की बाते है। जो निश्चय बुधी है उनको ही समझ मे आता है। उनके लिये कहा है कि अतिइन्द्रिय सुख गोप-गोपियों से पूछो। सतयुग मे तो गोप-गोपियां होती नही है। ... ही तुम्हारा यह रमणीक नाम रखा हुआ है। अभी तुम समझते हो कि हम बेहद के बाप के बने है। तो है ही स्वर्ग का रचता तो हम बच्चों को जरूर वो ही वर्सा प्राप्त होना चाहिये। अब बच्चों को ... आता है कि जानते हो कि हम भाई-बहनो को ब्रहमा द्वारा वर्सा जरूर मिलना है। कल्प-2 मिलता है मिलता ही रहेगा। अनन्य बच्चे तो घर बैठे हुये भी समझते है कि हम बाप के बने है। बाप ने ... है कि शरीर का निर्वाह भी करना है तो कमल के फूल समान भी बनना है। ... समझते है कि हम शिव बाबा के पास जाते है। पत्र भी लिखते है तो शिव बाबा केयर आफ ब्रहमा बाबा ... पर बच्चे आते है ... भूल जाते है। इस समय हम जितना पुरुषार्थ करना था वो ठीक किया। ... जानवरों की भी हवल की जाती है ना। ... बहुत मीठी घर बैठे ही ... है। ... ने यात्रा पूरी की अब यह यात्रा करते है। इस यात्रा से हम ... में जाते है।